D.B. College, Jaynagar
Deptt of Pol. science
B.A III, Pub. Admini-

DR. A.K. Yadav
Asstt Prof. Guest
Political science

Date-20-10-2020

Lecture No-22

मुख्य कार्यपालिका के विभिन्न प्रकार →

किसी भी देश की मुख्य कार्यपालिका का रूप वहां की संवैधानिक व्यवस्था के अनुरूप निर्धारित होता है। अधिनायक तंत्र में मुख्य कार्यपालक हिंसा व शक्ति के बल पर राज्य को स्थापित होता है और सैनिक समर्थन के माध्यम से अपनी सत्ता को बनाए रखता है। आधुनिक लोकतांत्रिक राज्यों में जनता के द्वारा निर्वाचित विधायिका होती है और वह जनता के प्रति उत्तरदायी होती है। अगर सैद्धांतिक दृष्टिकोण से देखें, तो मुख्य कार्यपालिका के तीन प्रकार हैं —

1- संसदात्मक
2. अध्यक्षात्मक
3- बहुल कार्यपालिका

① संसदात्मक कार्यपालिका (Parliamentary Executive) — यह शासन की वह व्यवस्था है जिसके अन्तर्गत व्यवस्थापिका और कार्यपालिका परस्पर सम्बन्धित होती है और कार्यपालिका, व्यवस्थापिका के प्रति उत्तरदायी भी होती है। संसदीय शासन व्यवस्था के प्रमुख उदाहरण के रूप में भारत और ब्रिटेन को रखा जा सकता है। इन देशों में वास्तविक और नाममात्र की मुख्य कार्यपालिका अलग-अलग है। भारत का राष्ट्रपति और ब्रिटेन का सम्राट या साम्राज्ञी को नाममात्र का मुख्य कार्यपालिका कहा जाएगा। संसदीय व्यवस्था में वास्तविक कार्यपालिका शक्ति मंत्रिमंडल में निहित होती है।

Scanned with CamScanner

(2) अध्यक्षात्मक कार्यपालिका (Presidential Executive) — अध्यक्षात्मक शासन प्रणाली वास्तविक एवं नाममात्र की कार्यपालिका में अंतर नहीं होता है। इसमें सभी कार्यपालिका शक्तियां मुख्य कार्यपालिका में ही समाहित रहती हैं और स्वयं वह उन शक्तियों का प्रयोग स्वतंत्र रूप से करता है। इस प्रकार की शासन प्रणाली का सर्वाधिक महत्वपूर्ण उदाहरण के रूप में अमेरिकी शासन व्यवस्था को माना जा सकता है। जहाँ का शासक राष्ट्रपति होता है और वह सर्वेसर्वा होता है। गैटल का यह कथन काफी महत्त्वपूर्ण है कि— "अध्यक्षात्मक शासन वह प्रणाली है, जिसमें कार्यपालिका प्रधान अपने कार्यकाल और बहुत कुछ सीमा तक अपनी नीतियों और कार्यों के बारे में विधानमंडल से स्वतंत्र होता है।"

(3) बहुल कार्यपालिका — (Plural Executive) — बहुल या सामूहिक कार्यपालिका एक प्रकार की ऐसी कार्यपालिका है जिसके अन्तर्गत शक्तियां अंतिम रूप में एक व्यक्ति में निहित न होकर व्यक्तियों के समूह में निहित होती है। इसका प्रमुख उदाहरण स्विस कार्यपालिका है। जो संसदात्मक एवं अध्यक्षात्मक शासन प्रणाली दोनो में से किसी के भी अन्तर्गत नहीं रखी जा सकती है बल्कि इसमें दोनो प्रकार की शासन प्रणालियों का गुण देखने को मिलता है। संसदीय शासन प्रणाली की भाँति वह एक बहुल निकाय होती है जिसमें सात सदस्य होते हैं तथा ये सभी पद की दृष्टि से समान होते हैं। इन सातों व्यक्तियों को क्रमवार रूप से अध्यक्ष बनने का अवसर मिलता है, लेकिन सभी की शक्तियां लगभग समान होती है। स्पष्ट है कि यहाँ प्रधानमंत्री जैसे पद नहीं है, जो समान मंत्रियों में सर्वोच्च हो। यहाँ उल्लेखनीय है कि स्विट्जरलैण्ड की कार्यपालिका एक निश्चित काल के लिए निर्वाचित की जाती है और उस अवधि में उसे उसके पद से हटाया नहीं जा सकता। बहुल कार्यपालिका की अब तक की चर्चा से स्पष्ट है कि उसे दोहरे कार्यों का सम्पादन करना पड़ता है— राजनीतिक कार्य और प्रशासकीय कार्य।

Scanned with CamScanner